केजरीवाल के खिलाफ भाजपा की चाल

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का कहना है कि पूर्वी दिल्ली नगर निगम के हजारों सफाई कर्मचारियों के प्रदर्शन के पीछे भाजपा का हाथ है। ये कर्मचारी अपनी मांगों को लेकर दिल्ली के मुख्यमंत्री आवास के बाहर उग्र प्रदर्शन करते देखे गए हैं। इन कर्मचारियों की मांग है कि उन्हें सैलरी नियमित रूप से दी जाए, साथ ही एरियर भी दिया जाए। जहां तक दिल्ली की सफाई व्यवस्था की बात है तो केजरीवाल लगातार कहते रहे हैं कि वो सफाई व्यवस्था को लेकर खासे चिंतित हैं। इसलिए उन्होंने तय किया है कि अब वो इससे जुड़े सच सभी के सामने लाएंगे, ताकि इसे लेकर जो राजनीति की जा रही है वह बंद हो सके। इस पर घाघ राजनीतिज्ञों ने कहना शुरु कर दिया कि अब केजरीवाल को भी समझ में आ गया होगा कि राजनीति करना कितनी टेढ़ी खीर है।

शेयर बाजार 39 हजार से 34377 पर आने के मायने

भारतीय शेयर बाजार में मुम्बई स्टाक एक्सचेंज 28 अगस्त को 38896 तक के स्तर पर पहुंच गया था। उसके बाद से उतार-चढ़ाव के बीच 5 अक्टूबर 2018 को लगभग दो माह में शेयर बाजार 4517 अंक टूट गया। इसी तरह नेशनल स्टाक एक्सचेंज भी 11738 के स्तर से गोता लगाते हुए 5 अक्टूबर को 10316 पर पहुंच गया है। भारतीय अर्थव्यवस्था में केवल शेयर बाजार ही नहीं वरन् भारतीय रुपया भी डालर के मुकाबले तेजी के साथ गिर रहा है। 4 जनवरी 2018 डालर के मुकाबले रुपया 63.36 पर था। 9 माह के अंतराल में डालर के मुकाबले 5 अक्टूबर को रुपया 73.76 पर पहुंच गया है। इसी बीच एक दिन 77.75 के स्तर को रुप्या ने छू लिया था। रिजर्व बैंक ने तुरन्त डालर की बिकवाली की उसके बाद रुपये में सुधार आया था। 9 माह की अवधि में 10.40 रुपया डालर के मुकाबले गिरा है। अर्न्तराष्ट्रीय बाजार में कच्चा तेल भी 87 डालर प्रति बेरल तक पहुंच गया है। भारत अपनी जरुरत का 80 फीसदी कच्चा तेल विदेश से आयात जरुरत करता है। जिसके कारण डालर के मुकाबले रुपया गिरने से कच्चा तेल भारत में और महंगा हो गया है। भारत के आयात-निर्यात व्यापार में भी घाटा तेजी के साथ बढ़ता जा रहा है। जिसके कारण राजकोषीय घाटा बढ़ रहा है। आयात ज्यादा होने के कारण विदेशी मुद्रा कोष तेजी से कम हो रहा है। जिसके कारण रुपया दिनों-दिन कमजोर होकर नए-नए रिकार्ड बना रहा है। सार्वजनिक क्षेत्रों के बैंकों का एनपीए 12 लाख करोण रुपया पर पहुंच गया है। शेयर बाजार में पिछले 2 माह में 4519 अंकों की गिरावट आने से लगभग 25 लाख करोण का नुकसान शेयर बाजार से निवेशकों को हुआ है। इसमें भी सबसे बड़ा घाटा सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों, भारतीय जीवन बीमा निगम, म्युचुअल फण्ड की कम्पनियों को हुआ है। इसमें पीएफ ट्रस्ट भी शामिल है। विदेशी निवेशकों द्वारा भी शेयर बाजार से लगातार निकासी की जा रही है। अप्रैल से 4 अक्टूबर तक की अवधि में 89680 करोण रुपया शेयर बाजार से बाहर हो गए हैं। भारतीय अर्थ-व्यवस्था को लेकर चारों तरफ से निराशाजनक स्थिति बनी हुई है। पिछले दो माह में रिजर्व बैंक और वित्तीय संस्थाओं ने शेयर बाजार को गिरने से रोकने के लिए हरसंभव प्रयास कर लिए है। रुपये की गिरावट को थामने के लिए भी रिजर्व बैंक ने खुले बाजार में डालर की निकासी की। जिसके कारण रुपया 77 रुपया के स्तर को छूने के बाद वापिस लौटा था। किन्तु इसके बाद भी रुपया रोजाना कमजोर होता जा रहा है। वर्तमान स्थिति को देखते हुए 1993 में शेयर बाजार की जो स्थिति हर्षद मेहता के समय हुई थी। वही स्थिति अब निर्मित हो चुकी है। 2008 में अमेरिका में लेहमेन ब्रदर्श के कारण अर्थव्यवस्था का जो फुग्गा फूटा था। उसने सारी दुनिया को संकट में डाल दिया था। अमेरिका के सैकड़ों बैंक दिवालिया हो गए थे। उस समय अमेरिका के बैंकों की बेलेंसशीट में बहुत अच्छी स्थिति थी। एक ही झटके में सैंकडों बैंक दिवालिया हो गए। अमेरिका भी आर्थिक संकट में फंस गया। लाखों की संख्या में सरकारी कर्मचारी बेरोजगार हो गए। कई नगर निगम दिवालिया हो गई। अमेरिका में बेरोजगारी फैल गई। भारत सरकार और रिजर्व बैंक इस भयावह स्थिति में भी जिस तरह आँख मूंदकर विश्वास के भरोसे बैठे हुए है, कि सब कुछ ठीक हो जाएगा। यह धृतराष्ट्र जैसी स्थिति है। वित्तीय विशेषज्ञों का कहना है, कि पिछले वर्षों में मुनाफा वसूली करके बड़े पैमाने पर शेयर बाजार को गुब्बारे की तरह फुलाया गया था। मुनाफा खोरी का पैसा विदेशों में बड़े-बड़े उद्योगपतियों ने निवेश कर दिया है। बैंकों से बड़े पैमाने पर कर्ज लेकर सुनयोजित रुप से धोखाधड़ी करते हुए विदेशों में निवेश किया गया। कोयला, कच्चा तेल और आयातित वस्तुओं की ओवर इन्वासिंग करके भारत की विदेशी मुद्रा बड़े पैमाने पर विदेशों पर निवेश की गई है। भारत के बैंक और भारतीय शेयर बाजार को कागजों पर मुनाफे में बताकर लूट का जो नंगा खेल खेला गया है। उसका गुब्बारा अब फूटने के कगार पर आ गया है।

विचार

अभी सस्ता बाद में महंगा

पेट्रोल-डीजल के बढ़ते दामों ने पिछले तमाम रिकार्ड तोड़ दिए हैं। इस बढ़ती कीमतों का दबाव सीधे तौर पर आम इंसान पर पड़ा है, इसलिए इस पर राजनीति भी जमकर हो रही है। इसे देखते हुए ही केंद्रीय वित्त मंत्री अरुण जेटली ने पेट्रोल-डीजल की कीमतों में 2.50 रुपये प्रति लीटर की कटौती का ऐलान किया, जिसे देखते हुए भाजपा शासित राज्यों और जम्मू कश्मीर ने स्वीकार करते हुए कीमतें कम कीं। इस पर जानकारों समेत तमाम विरोधी पार्टियों के नेताओं ने कहना शुरु कर दिया है कि अभी तो दाम घटाए गए हैं, लेकिन यह लंबे समय के लिए नहीं हैं, क्योंकि जैसे ही अंतर्राष्ट्रीय दबाव तेल की कीमतों पर पड़ेगा पुनः दाम बढ़ाए जाने लगेंगे। वहीं कुछ लोगों का कहना है कि 20 रुपए तक महंगा करके दो-ढाई रुपए की राहत देने से कोई कैसे संतुष्ट हो सकता है। होना तो यह चाहिए कि पेट्रोलियम पदार्थों को भी जीएसटी के दायरे में लाया जाए, ताकि इनकी कीमतों में भी कमी आ सके, लेकिन कमाई में लगी मोदी सरकार ऐसा नहीं करेगी। यही वजह है कि कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी लगातार उन पर निशाना साध रहे हैं।

नीतिश की साख का सवाल

बिहार को विशेष राज्य का दर्जा दिए जाने की मांग खारिज होने के बाद राजनीतिक सरगर्मियां बढेंगी ही बढ़ेंगी। जद (यू) की पुरानी मांग यदि केंद्र में मोदी सरकार के रहते हुए भी पूरी नहीं हुई तो चुनावों में पार्टी की फजीहत होना तय है। यही वजह है कि जदयू नेता और मंत्री कृष्णनंदन वर्मा कह रहे हैं कि बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने की बात हुई है। वहीं खुद मुख्यमंत्री नीतिश कुमार कह रहे हैं कि विकास के लिए बिहार को %विशेष राज्य% का दर्जा मिलना ही चाहिए। इन तमाम बातों को लगभग काटते हुए मंत्री और भाजपा नेता विनोद नारायण झा ने कहा है कि बिहार के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पहले ही विशेष पैकेज की घोषणा कर चुके हैं, जिस पर काम चल रहा है। ऐसे में और कोई बात कैसे की जा सकती है। बहरहाल जानने वाले तो जान ही रहे हैं कि यदि बिहार को विशेष राज्य का दर्जा नहीं मिला तो नीतिश कुमार और उनकी पार्टी को चुनाव में खासा नुक्सान उठाना पड़ेगा, इसलिए वो लगातार इस मांग को उठाते रहें तो आश्चर्य नहीं होगा।

अनुशासनात्मक कार्रवाई?

उत्तर प्रदेश विवेक हत्याकांड मामले के आरोपी सिपाहियों को बर्खास्त करने के बाद भी राजनीति हो रही है। अनेक सिपाही संगठनों ने इस कार्रवाई का विरोध किया है। मतलब अपने ही विभाग की कार्रवाई के खिलाफ अपने ही खड़े हो रहे हैं। इस मामले में पानी सिर से ऊपर जाता देख अब डीजीपी मुख्यालय ने एक्शन लेने की ठानी और देखते ही देखते एक सिपाही को निलंबित कर दिया। इस पर भी अन्य सिपाही दबी जुबान में कह रहे हैं कि आखिर और कितने सिपाहियों पर अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी, क्योंकि ज्यादातर सिपाही और संगठन तो हत्या के आरोपी सिपाही और उसके परिजनों के साथ खड़े हैं। यही वजह है कि आरोपी सिपाही प्रशांत की पत्नी के बैंक खाते में पैसे जमा कराने का भी अभियान चलाया गया। गौरतलब है कि जिस सर्वेश चौधरी नामक सिपाही को निलंबित किया गया है उसने फेसबुक पर लिखा था कि 'मुझे बर्खास्त करो, मैंने दिए हैं सिपाही को पैसे।' इसके बाद डीजीपी ओम प्रकाश सिंह ने उक्त सिपाही के खिलाफ कार्रवाई के निर्देश दिए।

सूक्ति

सच्चाई से जिसका मन भरा है, वह विद्वान न होने पर भी बहुत देश सेवा कर सकता है।

- पं. मोतीलाल नेहरू

स्वतंत्र वही हो सकता है जो अपना काम अपने आप कर लेता है।

- विनोबा

विचार मंथन

'जय जवान-जय किसान' की खुल गई पोल

> वैसे भी देश की अधिकांश किसान यूनियन स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों को लागू करवाना चाहती हैं। परंतु सरकारें इस रिपोर्ट को पूरी तरह से लागू नहीं कर पा रही हैं। ऐसा न कर पाने के लिए निश्चित रूप से या तो देश के नेताओं व शासकों की नीयत में खोट है या फिर वे देश के किसानों की खुशहाली देखना नहीं चाहते। या फिर सरकार इन सिफारिशों को लागू कर पाने में ही सक्षम नहीं है।

एक बार फिर गत् दिवस 2 अक्टूबर को देश ने गांधी-शास्त्री जयंती मनाने की औपचारिकता निभाई। वैसे भी देश, गांधी व शास्त्री जी को याद तो ज़रूर करता है परंतु क्या उनके चित्रों पर फूल माला चढ़ा देने मात्र से या उनके जीवन वृतांत बताने वाले भाषण या आलेखों से ही ऐसे महान नेताओं को श्रद्धांजलि दिए जाने का कर्तव्य पूरा समझ लिया जाना चाहिए? महात्मा गांधी ने यदि हमें सत्य व अहिंसा का पाठ पढ़ाया और उनकी विश्वव्यापी स्वीकार्यता का कारण भी उनका यही सिद्धांत बना तो क्या हमें यह सोचने की ज़रूरत नहीं कि आखर गांधी के अपने देश में इन दिनों सत्य व अहिंसा के उनके सिद्धांत की क्या धरातलीय स्थिति है? क्या गांधी के हाथ में झाड़ू थमा कर उन्हें स्वच्छ भारत मिशन से जोडकर ही गांधी के समस्त आदर्शों व सिद्धांतों तक पहुंचा जा सकता है? इसी प्रकार देश को 'जय जवान-जय किसान' का नारा देने वाले देश के पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के इस नारे को हम अपने देश में कितना कारगर होता देख रहे हैं? क्या भारत जैसे उस महान देश में जहां कि किसानों को अन्नदाता कहा जाता हो और इन्हीं की बदौलत भारतवर्ष को कृषि प्रधान देश भी कहा जाता हो, आज यदि उस देश का किसान फांसी पर चढने को मजबूर हो या ज़हर खाकर आत्महत्या करने को मजबूर हो या साहूकार के कर्ज के बोझ तले दबकर मरना उसकी नियति में शामिल हो या फिर जो किसान खाद-बीज के पैसे की कमी के चलते अपनी खेती-बाड़ी छोडकर कस्बों व शहरों में रिक्शा चलाने,मज़दूरी करने या दूसरे के खेतों में काम करने के लिए विवश हो,क्या हमारे कृषि प्रधान देश के अन्नदाता की क्या यही असली तस्वीर है?

और तो और हद तो उस वक्त पार हो गई जब गत् 2 अक्तूबर को शास्त्री जी का दिया हुआ नारा जय जवान-जय किसान बोलते हुए जब हज़ारों किसानों का एक पैदल मार्च उत्तर प्रदेश व दिल्ली की सीमा पर राजघाट की ओर बढ़ते हुए पहुंचा तो इन्हीं 'जय जवानों' ने उन हज़ारों 'जय किसानों' के ऊपर आंसू गैस के गोले छोड़े,उनपर रबर की गोलियां चलाईं तथा लाठी चार्ज भी किया। कई किसानों को गंभीर से लेकर मामूली चोटें भी आईं। गौरतलब है कि देश के प्रमुख किसान संगठन भारतीय किसान यूनियन द्वारा इस मार्च का आयोजन किया गया था। इसमें विभिन्न राज्यों के किसान शामिल थे जो सरकार को उसके द्वारा किए गए वादों की याद दिलाने के लिए दो अक्तूबर को राजघाट पहुंच कर अहिंसा के पुजारी तथा गांधीवाद के प्रसारक महात्मा गांधी की समाधि स्थल पर शांतिपूर्ण ढंग से अपनी मांगें सरकार तक पहुंचाने की कोशिश कर रहे थे। मोटे तौर पर इन किसानों की वही मांगे थी जो सत्ताधारी नेताओं द्वारा चुनाव के समय में किसानों सहित समाज के अलग-अलग वर्गों के लोगों को आकर्षित करने हेतु जिनके वादे किए गए थे। इनमें खासतौर पर किसानों की कर्ज माफी,बिजली के बिल की माफी,गन्ने का बक़ाया भुगतान जैसी मांगे शामिल हैं। हालांकि विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा किसानों की कर्ज माफी की घोषणा तो ज़रूर की गई है परंतु सरकार की इस घोषणा से सभी कर्जदार किसान लाभान्वित नहीं हो पा रहे हैं। क्योंकि कर्ज माफी के अंतर्गत् सरकार द्वारा निर्धारित श्रेणियों में आने वाले किसान ही शामिल हैं।

वैसे भी देश की अधिकांश किसान यूनियन स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों को लागू करवाना चाहती हैं। परंतु सरकारें इस रिपोर्ट को पूरी तरह से लागू नहीं कर पा रही हैं। ऐसा न कर पाने के लिए निश्चित रूप से या तो देश के नेताओं व शासकों की नीयत में खोट है या फिर वे देश के किसानों की खुशहाली देखना नहीं चाहते। या फिर सरकार इन सिफारिशों को लागू कर पाने में ही सक्षम नहीं है। 2004 में गठित नेशनल कमीश्र ऑन फार्मर्स ने अपनी सिफारिशों में किसानों के हितों से संबंधित जिन बिंदुओं को मुख्य रूप से चिन्हित किया था उनमें किसानों को कम कीमत में उच्च श्रेणी के बीज मुहैया कराना,किसानों के ज्ञानवर्धन हेतु ज्ञान चौपाल बनाना,महिला किसानों को क्रेडिट कार्ड उपलब्ध कराना,समय-समय पर आने वाली प्राकृतिक आपदाओं का मुकाबला करने हेतु कृषि जोखिम फंड की स्थापना करना,फसल के उत्पादन मूल्य से पचास प्रतिशत अधिक फसल का दाम निर्धारित करवाना,प्रयोग में न आने वाली ज़मीन को भूमिहीन किसानों में आबंटित कर देना, वन भूमि को कृषि के अतिरिक्त किसी भी दूसरे काम के लिए किसी कारपोरेट अथवा औद्योगिक घरानों को आबंटित न करना, सभी किसानों को फसल बीमा सुविधा उपलब्ध करवाना तथा कृषि जोखिम फंड का निर्धारण आदि बातें शामिल हैं।

स्वामीनाथन आयोग की उपरोक्त सिफारिशों में से हालांकि कई सिफारिशें अलग-अलग रूप में विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा मानी भी जा चुकी हैं। परंतु इन सिफारिशों को अभी तक समग्र रूप से लागू नहीं किया जा सका है। बजाए इसके हमारे देश के अन्नदाताओं को और भी नित नए नियमों व कानूनों से बांधने की कोशिश की जाती है। मिसाल के तौर पर फसल की कटाई के बाद खेतों में पड़े कचरे में आग लगाना कानूनन जुर्म हो गया है। सरकार खेतों में कूड़ा-करकट जलाने से तो रोकती है परंतु किसान इस कचरे को कैसे समेटे,क्या करे, कहां ले जाए और इस कचरा उठान व निपटान प्रक्रिया में आने वाले खर्च को कौन वहन करेगा, इसकी कोई योजना नहीं। ऐसे में यदि देश का किसान यह पूछे कि जब अंतरिक्ष में चक्कर लगाने वाली सेटेलाईट को खेतों से उठने वाला धुंआ दिखाई दे जाता है और वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुंच जाते हैं कि भारतीय किसान ग्लोबल वार्मिंग बढ़ाने में अपना योगदान दे रहा है फिर आखिर किसानों का यह सवाल क्योंकर नाजायज़ है कि फिर उन्हीं सेटेलाईट को यह क्यों नहीं दिखाई देता कि किसानों की फसल सूखे से तबाह हो गई है,बाढ़ में बह गई या सड़ गई है या फसल की पैदावार उम्मीद से कम हुई है और सरकार ऐसी सूचनाओं के आधार पर किसानों के मुआवजे क्यों निर्धारित नहीं करती? जय जवान-जय किसान की क़लई उस समय तो खुल ही गई जब बापू व शास्त्री जी को याद करते नारा लगते हुए राजघाटकी ओर बढ़ते किसानों से पुलिस पूरी ताकत के साथ जूझ रही थी तथा उनपर बल प्रयोग कर रही थी। साथ ही साथ देश के मुख्य धारा के कई प्रमुख टीवी चैनल्स को भी इसी दिन बेशर्मी का लिबास ओढ़े हुए उस समय देखा गया जबकि हज़ारों किसानों की यह भीड़ दिल्ली राजघाट की ओर बढ़ती हुई टीवी चैनल्स को नज़र नहीं आई। इतिहास कभी भी सत्ता के चाटुकार ऐसे मीडिया घरानों को माफ नहीं करेगा जो गांधी-शास्त्री जयंती पर बापू व शास्त्री जी को याद करने की खबरें प्रसारित कर औपचारिकता तो ज़रूर पूरी कर लेते हैं परंतु इन्हीं टीवी चैनल्स को इन किसानों की फरियाद,इनकी मांगे,इनपर बरसने वाला पुलिसिया कहर,इनकी दुर्दशा,इनकी आर्थिक स्थिति आदि कुछ भी दिखाई नहीं देती। इसके पहले भी दिल्ली,मध्यप्रदेश तथा महाराष्ट्र में गत् कुछ महीनों के भीतर कई बड़े से बड़े किसान आंदोलन हो चुके हैं।

मियां की भैंस, पानी और पेट्रोल !

कुत्ते भी अपनी कारस्तानी से सुर्खियों में रहते हैं।कभी वफाई तो कभी बेवफाई को लेकर। स्वामीभक्ति का तमगा इनकी बपौती है। लेकिन मौसम देख बन्दे मिजाज बदलने में उस्ताद होते हैं। कुत्तों के भाग पर लिखी महान कवि की वह कविता हमें आज भी चुभती है। स्वानो को मिलता दूध - भाँत भूखे बच्चे चिल्लाते हैं। खैर छोड़िए ! काग् के भाग बड़े सजनी हरि हाथ सों ले गौ , माखन रोटी, क्या करिएगा यह दुनिया है। कुत्तों का भला क्या दोष, भौंकना तो इनकी आदत है, लेकिन कभी - कभी इनका जीन मुलुक के नेताओं में भी घूस जाता है। उस दौरान तो सुनामी आ जाती है , दौर चुनावी हो तो क्या कहने यानी सोने पर सुहागा। चुनावी मौसम में कुत्तों और राजनीति का डीएनए पार्टनरशिप हासिल कर लेता है।

अब कुत्तों को क्या कहें जनाब इनसे तो पूरी दुनिया परेशान है। अपना पड़ोसी भी परेशान है। अपने मियां के गले की फांस बन गए हैं मुये। सरकार बन गई तब भी वजीरे आजम के मुलुक में कुत्ते साया नहीं छोड़ रहे। नामदों को अपनी बेशर्म बहादुरी दिखाने की दूसरी जगह भी नहीं मिली। इण्टरनेशनल ऐयरपोर्ट पर गुस्सा उतारने लगे। अरे भाई कुछ तो जनाब और उनके ओहदे का खयाल रखते। जुम्मा- जुम्मा चार दिन भी अवाम की ताजपोशी के नहीं हुए। लेकिन तुम काले कुत्ते जमात और जात का जरा सा खयाल किए बिन औकात पर उतर आए। कम से कम मियां की सोची होती। विरोधियों के हाथ में आणविक हथियार थमा दिया।

जनाब दुनिया में मुलुक की माली हालत सुधारने के लिए बिन जूती दस्तक दे रहे हैं । इधर एयरपोर्ट पर कुत्तों की आवाराग्री ने उन्हें सांसत में डाल दिया। कलमुंहे ! चैलन वालों को भी क्या कहें, उन्हें तो नेक काम नज़र नहीं आता। बस कुत्तों की ब्रेकिंग, जैसे मुल्क में दूसरी समस्या है ही नहीं। उफ़ !

अब जनाब के विरोधी भला पीछे क्यों रहते। बोल रहे हैं कि कुत्ते नहीं सम्भल रहे तो देश क्या सम्भलेगा। शर्म नहीं आती , कितने बेशर्म हैं उनकी शराफत की पोलटिक्स। लगता है मियां की क्रिकेट की लाइफ से विपक्ष ने कोई अनुभव नहीं लिया। आपने तो केवल भौंकना सीखा, अपनी गू नहीं दिखती। जनाब को तो शराफत वालों ने मार डाला। उनकी काबिलियत पर शेर पढ़नेवालों जरा शर्म करो। आपकी वजह से उन्हें भैंसे नीलाम करनी पड़ रही। आपने तो मुल्क से भी बड़े अक्ल की भैंसों की फौज तैयार कर रखा था। आपकी सेहत की शराफत ने तो सारा दूध निगल मुलुक की नजाकत बिगाड़डाली है। पूरी ऊर्जा तो अपने पड़ोसी मुल्क को तबाह करने में लूटा दिया। आधा तो दहशत का आका हाफिज पी गया, बाकि आपको खुद मालूम है। फ़िर मुलुक कमजोर नहीं होगा तो क्या होगा। अब बेचारे वजीरे आजम का क्या दोष। अब तुम्हारी भैंसों और कारों को नीलाम कर मुलुक को पानी और पेट्रोल पिला रहे हैं। फ़िर एयरपोर्ट से आवारा कुत्ते और चमगादड़ कहाँ से भगाएं।

बेचारे मियां क्या करें। वह बेदबी से पल रहे आवारा कुत्ते हाफिज को सम्भाले मुलुक को। किस - किस और कितनों की आवारगी से निपटेंगे। मुलुक की सेहत सुधारें की मरियमों की, बेचारे अजीब उलझन में हैं। ढलती उमर में कई बीवियां और उससे भी बड़ी मुलुक की जिमेदारी। कुछ समझ में नहीं आ रहा बुरे फँस गए। सरकार , सत्ता , वजीरे आजम का सर्कस तो आ बैल मुझे मार की स्थिति में खड़ा कर दिया। दूसरी तरफ़ पड़ोस में आतंक की फसल भी उगानी है। यूएन में झूठ की पोथी भी वाचनी है। जुबान से एटम बम भी गिराना है। हाय राम ! बड़ी कठिन है डगर पनघट की। अभी तक तो क्रिकेट और बीवियों को लेकर सुर्खियों में थे , अब तो शराफत की चालों में उलझ नाकामियों की वजह बदनाम होंगे। लगता है क्रिकेट की तरह पालटिक्स से भी सन्यास लेना पड़ सकता है। लेकिन मुये ! शराफतिए मियां को बख्श दो। बेचारे को थोड़ी रुखसत तो दो । अभी बच्चा स्कूल में दाखिला लिया नहीं तभी फेल का सर्टिफिकेट बाँटने लगे। हम तो अपने मियां के लिए दुवा करते हैं। मुये कुत्तों , चमगादडों और टीवी के एंकरो थोड़ी शराफत बरतो। अपने मुलुक और मियां के लिए, उन्हें मौका तो दो । तूने तो कटोरा थमा दिया। सल्तनद चलाए की तुम्हारा विरोध सम्भाले। तुमने आखिर छोड़ा ही क्या, उन्हें भैंस बेचनी पड़ी। मुलुक की अर्थव्यवस्था सम्भालने के लिए मियां का भैंस अर्थशास्त्र कितना कामयाब होता है उसके लिए समय तो दो। अभी भैंस पानी में नहीं गई फ़िर जुबानी जंग शुरु कर दिया। हाफिज से बोल अभी मियां से खुदा हाफिज कर लें। अभी मुलुक को पानी और पेट्रोल की ज़रूरत है, तुम्हारी नहीं। फ़िर मिलते हैं।

चिंतन-मनन

सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण व्यक्तित्व

आज का मानव बाहरी दुनिया की चकाचौंध के कारण अपने अस्तित्व को ही भूल गया है। हद यह है कि वह अपना मानव धर्म ही भूल गया है और समाज जैसे अपने मूल स्रोत से कटकर अंधकार में जीने को विवष हो रहा है। इस भटकाव से मानव को यदि कोई बचा सकता है तो वह उसका अपना धर्म ही है। ऐसा धर्म-कर्म जो मानव को शांति प्रदान करता हो। यह वही धर्म है जो मानव को अपने स्वयं के उत्तरदायित्वों से लेकर परिवार, समाज और देश के साथ ही साथ विश्व के प्रति दायित्वों का बोध कराता है। ऐसे में यदि संसार का प्रत्येक मानव यह भलीभांति समझ ले कि उसका अपने प्रति, समाज के प्रति, राष्ट्र और विश्व के प्रति क्या उत्तरदायित्व है तो सारे विवाद स्वतः ही सुलझ जाएंगे और खुशहाली व प्रसन्ता का दौर पुनः प्रारंभ हो जाएगा। मानव में यह परिवर्तन तभी संभव है जबकि उसके अपने विचारों में परिवर्तन आए। इसलिए यह जरूरी हो गया है कि दूसरे को सुधरने की शिक्षा देने की बजाय हम अपने आपको वैचारिक धरातल पर ले जाकर सुधारने की कोशिश करें। जग स्वतः सुधरता नजर आ जाएगा। हमें स्वतः हर संभव कोशिश करना चाहिए कि मन में सकारात्मक विचारों को पोषित किया जा सके ताकि हमारा व्यक्तित्व सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण हो सके।

अभी नहीं तो कब छोड़ेंगे मांसाहार

आज समाज में सामान्यतः यह चर्चा सुनने मिलती हैं की हमारे समाज या घरों में रोज नित्य नयी बिमारियों ने डेरा जमा लिया हैं। किसी न किसी को कुछ न कुछ लगा रहता हैं, कोई शारीरिक रोगों से पीड़ित तो कोई मानसिक रोगों से जैसे क्रोध, तनाव, प्रतिस्पर्धा, प्रतिद्वंदिता से और समाज में अपहरण, दंगे, युध्य, हत्या, कलह, भुखमरी नशाखोरी और वर्तमान में बलात्कार का प्रचलन आम बात होती जा रही हैं। जैसा कहा जाता हैं की जैसा खाएंगे अन्न वैसा होगा मन, जैसा पियोगे पानी वैसी होगी वाणी।

इसका प्रमुख कारणों में महत्वपूर्ण कारण कही हमारा आहार तो नहीं हैं ! जी हाँ, दुनिया में और खासतौर पर हमारे देश इंडिया में मांसाहार का प्रचलन बहुत तेज़ी से बढ़ रहा हैं। यह मांसाहार जब हम सेवन करते हैं क्या उसके पहले हमने कभी सोचा हैं की यह कहाँ से, कैसे प्राप्त होता हैं, कोई भी मांस बिना हिंसा के नहीं मिल सकता। हिंसा खुद करो या कराओ। खरीदो। बेचो, पकाने वाला,परोसने वाला, खाने वाला सबसे पहले कसाई की श्रेणी में आता हैं ! जी हाँ ये सब कसाई कहलाते हैं। मांस खाने वाला अपने आप सैकड़ों बीमारियों की आमंत्रित करता हैं और स्वयं विनाश की और अपने आप जाने लगता हैं। जिस छोर से हमने मनुष्य होना शुरू किया था, मांसाहार हममे बर्बरताएं बढाकर हमें उसी बिंदु में खींच लाने पर कटिबध्य हैं। ब्रिटेन के कत्लखानों से हर वर्ष एक अरब किलोग्राम खून (एक लाख टन)नालियों में बहकर वहां के पर्यावरण को प्रदूषित करता हैं और इंडिया में हम विश्व में अग्रणी हैं।

इसीलिए आज क्रूरताओं ने इंसान को इंसान नहीं रहने दिया हैं। हिंसा के कारण वह पिशाच बन गया हैं। दुनिया में कोई भी धरम विश्वासघात की सीख नहीं देता हैं, किन्तु हम हैं की हमने कहीं न कहीं से कोई गली /रास्ता निकाल ली हैं और अपने स्वाद और शौक के लिए अपने खूनी पंजों से आसपास के वातावरण को दूषित करने पर तुले हुए हैं। आज कुछ अमीर और जिव्हालोलुपी बदवहास जायके के लिए हमें अपने मूक -निरीह पशुओं को मारने का कोई हक़ नहीं हैं। हम धन के पीछे अपनी शस्य श्यामला वसुंधरा को उजाड़ने तुले हुए हैं और अपनी ही पशु सम्पदा को बर्बाद कर रहे हैं। ज़मीर - की -मौत का इससे बड़ा सुबूत और क्या हो सकता हैं की हम अपने पाँव पर अपनी ही कुल्हाड़ी चला रहे हैं। हमारे देश में अहिंसा की पूजा की जाती हैं और हिंसा से आर्थिक सम्पन्नता पाना चाहते हैं ! हमारे यहाँ नित नए नए कत्लखानों का निर्माण हो रहा हैं और यह भ्रान्ति फैलाई जाती हैं की यदि सब शाकाहारी हो जायेंगे तो अन्न की आपूर्ति नहीं हो पायेगी, इसलिए मांसाहार खाना जरूरी हैं। मांसाहार के बारे में यह जानना जरुरी हैं की यदि देश में मांसाहार बढ़ता हैं तो हमारा आर्थिक मानचित्र और नैतिक ढांचा भी बदसूरत हो पड़ेगा।, आर्थिक ही क्यों हमारा सांस्कृतिक और नैतिक ढांचा भी बदसूरत हो पड़ेगा और हो गया। वैसे भी हमारे जीवन मूल्य एक तो नष्ट हो ही गए और जो बचे हैं वे भी चिन्दी चिन्दी हो जायेंगे और और हो रहे।

एक और महत्वपूर्ण जानकारी देना उचित हैं की हम पानी की तंगी से जूझ रहे हैं उसका सबसे बड़ा कारण मांसाहार हैं। एक अमेरिकन औसत 120 किलो मांस वार्षिक खाता हैं जिसे प्राप्त करने में लगभग एक टन अनाज खर्चा होता। एक टन अनाज से एक वर्ष में दस व्यक्तियों का काम चल सकता हैं एक किलो गेहू के उत्पादन में जहाँ 50 गैलन पानी लगता हैं एक किलो मांस उत्पादन में 5000 गैलन पानी लगता हैं। इसीलिए जैसे जैसे कत्लखाने खुलेंगे वैसे वैसे पानी की कमी होती जाएँगी दुनिया भर में अपहरण, युध्य दंगे, कलह, हत्याएं, विकलाँगता, भुखमरी नशाखोरी बेहताशा बढ़ रहे हैं !! इसका कौन हैं जिम्मेदार ?मांसाहार, हम जब हिंसाएं कर रहे तो बदले में हिंसा /क्रूरता पाएंगे, भुखमरी का आलम यह हैं की विश्व में हर रोज करोड़ों लोग या तो भूखे रह रहे हैं या आधा पेट सोते हैं। हम एक ऐसी दुनिया में जी रहे हैं जहाँ रोज लाखों बच्चे भूख से छटपटा कर दम छोड़ देते हो क्या नर्क से कम कही जाएँगी ?कौन हैं इन बच्चों और इतनी बड़ी आबादी पर जुल्म ढोने वाले ?मांसाहारी। मांसाहारी।

एक और बहुत महत्वपूर्ण बात जानना जरुरी हैं की जो देश मांसाहारी हैं और जो मांसाहार के लिए पशुओं को पनपाते और काटते हैं जिन्होंने कृषि भूमि को चारागाह में बदल रखा हैं, कारखाने चला रहे हैं मांस के, चूज़ों के, अण्डों के -जिम्मेदार हैं इस मानवीय संकट के लिए। मांस - अंडे की व्यापारिक लॉबी आक्रामक प्रचार के माध्यम से। अपने अस्तित्व के संघर्ष के लिए अरबों पौंड /डॉलर खरच कर लुभावने विज्ञापनों से आकर्षित कर जबरन उपभोक्ताओं को थोपना चाहते हैं। सरकारें इन लॉबी के सामने बंधुआ मजदूर की तरह, या कुत्ते के समान दुम हिलती नज़र आती हैं। इसका उदाहरण दिल्ली मुंबई, हैदराबाद, चेन्नई, कोलकत्ता से नित्य इंडिया का मांस बनकर/पैक होकर मध्य एशिया और अरब देशों में आबाध गति से पहुंचाया जाता हैं।

हमारे देश अहिंसा का पुजारी हैं यह मांसाहार हमारे देश के लिए अभिशाप हैं। वास्तव में हमने यदि मांसाहार की निर्थकता को तमाम वैज्ञानिकों, धरम गुरुओं, डॉक्टर्स और सांस्कृतिक चेतावनियों के बावजूद भी नहीं समझा तो यह तय हैं की हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, नैतिक, स्वास्थ्य खतरे में पड़ जायेंगे और हम युगयुगो के लिए पतन की राह पर आ खड़े होंगे।

यहाँ तक भी सबसे क्रूर जानवर शेरनी जब अपने बच्चे को जन्म देती हैं तब वह स्तनपान कराती हैं ना की रक्तपान। हम जब किसी भी वस्तु ता खाद्य पदार्थ को खरीदते या खाते हैं तब उसकी गुणवत्ता की परख करते हैं क्योकि उसमे धन लगता हैं। क्या वह धनहमारे लिए कितना उपयोगी हैं इसका चिंतन नहीं करना चाहिए ? दूसरा शाकाहार पदार्थ देखने में सुन्दर और मन को ललचाते हैं और छूने का मन होता हैं जबकि मांस देखने में घिनोना, ग्लानि पैदा करता हैं और छूने के बाद हाथ धोना पड़ता हैं। मांस हिंसा से प्राप्त होता हैं, दूध वात्स्लय भाव से। अंत में यह कहना उचित हैं मांस खाओ और अनेकों जघन्य बीमारियां बुलाओ।